REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

जनपद हरिद्वार के ग्रामीण क्षेत्रों की अनुसूचित जातियों पर शहरीकरण का प्रभाव

डॉ० अनिल कुमार सैनी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान ,
महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय,
बिथ्याणी, यमकेश्वर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड).

सारांश

उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद से जनपद हरिद्वार में (हरिद्वार एवं रूड़की) दोनों शहरों में औद्योगिक क्षेत्र बन जाने के कारण शहरीकरण की प्रक्रिया में तेजी आयी है। आय का स्तर बढ़ने तथा आजीविका की तलाश और बेहतर संसाधनों के चलते लोगों का शहरों की तरफ रूझान बढ़ा है। शहरीकरण की प्रक्रिया के साथ–साथ राजनीतिक दलों की क्रियाशीलता भी बढ़ जाती है। वास्तव में, शहर राजनीतिक दलों का केन्द्र होते हैं और वे अपने–अपने आदर्शों एवं सिद्धान्तों को फैलाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इसीलिए राजनीतिक दलों के दाव–पेंच सीखने का अवसर जितना शहरों में मिलता है, उतना गाँवों में कदापि नहीं। साथ ही, आधुनिक अर्थव्यवस्था के विकास ने समाज में विशेषतः नगरीय क्षेत्रों में सभी जातियों में उच्चोन्मुख सामाजिक गतिशीलता के अवसर प्रदान किये हैं। इस गतिशीलता से जनपद हरिद्वार के ग्रामीण क्षेत्र का अनुसूचित जातीय समाज भी अछूता नहीं रहा है।

मूल शब्द : शहरीकरण, राजनीतिक सक्रियता, राजनीतिक जागरूकता.

प्रस्तावना

शहरीकरण की प्रक्रिया शहर एवं शहर की विशेषताओं से सम्बन्धित है। शहरों में अनेक प्रकार के उद्योग–धन्धों एवं व्यापार का अस्तित्व होता है तथा देश–विदेश के विभिन्न भागों से प्रत्येक जाति, प्रजाति, धर्म और वर्ग के लोग शहर में आकर बस जाते हैं। इसीलिए शहर की जनसंख्या अधिक होने के साथ–साथ उसमें एकरूपता न होकर विभिन्नता पायी जाती है। शहरों में सभी विशेषताओं का विकास एकाएक नहीं हो जाता, बल्कि एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में एक समुदाय के जीवन में इन विशेषताओं का विकास होता हैं जिसे शहरीकरण या नगरीयकरण कहते हैं। शहरीकरण या नगरीयकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा गाँव धीरे–धीरे शहर में परिवर्तित हो जाते हैं। इस दृष्टिकोण से किसी ग्रामीण समुदाय में धीरे–धीरे उद्योग–धंधे, व्यापार, वाणिज्य, शिक्षण संस्थाएँ आदि स्थापित हो जाती हैं। परिणामस्वरूप वहाँ विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय और वर्ग के लोग आकर बस जाते हैं। वहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के व्यवसाय, यातायात और संचार के साधनों में विकास होना भी प्रारम्भ हो जाता है।

साथ ही एक राजनीतिक व्यवस्था एवं सरकारी तन्त्र का विकास हो जाता है; जोकि शहरीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है। वर्तमान समय में शहरीकरण की प्रक्रिया औद्योगीकरण, अनुकूल भौगोलिक स्थिति, राजधानी की स्थापना, सैनिक छावनी एवं प्रौद्योगिकीय विकास के कारण होती है। भारतवर्ष में शहरीकरण की प्रक्रिया स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अधिक तीव्र हुई है।

जनपद हरिद्वार में हरिद्वार एवं रुड़की नामक शहरों का विकास हुआ है। हरिद्वार शहर में प्राचीन समय से ही मुख्य बाजार है। हरिद्वार शहर मंदिरों की नगरी है, यहाँ लोग धार्मिक आस्था रखते हुए मंदिरों में दर्शन के लिए अधिकाधिक आते हैं। हरिद्वार एक छोटा शहर होने के साथ–साथ जनपद मुख्यालय भी है। रुड़की मुख्यतः अंग्रेजों के द्वारा बसाया गया एक सैन्य क्षेत्र है। जो धीरे–धीरे एक शहर एवं तहसील में परिवर्तित हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. अनुसूचित जातियों का शहरों की तरफ रूझान रखने का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जातियों में राजनीतिक सक्रियता एवं जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि एवं प्रतिदर्श

अध्ययन हेतु दैव निर्दशन का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में जनपद हरिद्वार के ग्रामीण क्षेत्रों को अनुसूचित जाति के {हरिजन (20), बाल्मिकी (20) तथा जुलाहा (हिन्दू) (20)} अर्थात कुल 60 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है।

अध्ययन की प्राप्तियाँ

अनुसूचित जातियों में शहरीकरण के प्रभाव को निम्न तालिकाओं में दर्शाया गया है–

तालिका – एक
उत्तरदाताओं का शहरों की तरफ रूझान रखने का वर्गीकरण

उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	हरिजन		बाल्मिकी		जुलाहा (हिन्दू)		कुल उत्तरदाता	
	आवृति	प्रति0	आवृति	प्रति0	आवृति	प्रति0	आवृति	प्रति0
हाँ	16	80.0	14	70.0	16	80.0	46	76.67
नहीं	4	20.0	6	30.0	4	20.0	14	23.33
योग	20	100.0	20	100.0	20	100.0	60	100.00

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 16 (80.0 प्रतिशत) हरिजन उत्तरदाता, 14 (70.0 प्रतिशत) बाल्मिकी उत्तरदाता तथा 16 (80.0 प्रतिशत) जुलाहा (हिन्दू) उत्तरदाताओं का शहरों की तरफ रूझान है। जबकि 4 (20.0 प्रतिशत) हरिजन उत्तरदाता, 6 (30.0 प्रतिशत) बाल्मिकी उत्तरदाता तथा 4 (20.0 प्रतिशत) जुलाहा (हिन्दू) उत्तरदाताओं का शहरों की तरफ कोई रूझान नहीं हैं। अतः स्पष्ट होता है कि कुल 60 (100.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं में से 46 (76.67 प्रतिशत) उत्तरदाता शहरों की तरफ रूझान रखते हैं। जबकि शेष 14 (23.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का शहरों की तरफ कोई रूझान नहीं है।

तालिका – दो
उत्तरदाताओं की राजनीतिक सक्रियता एवं जागरूकता बढ़ने का वर्गीकरण

उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	हरिजन		बाल्मिकी		जुलाह (हिन्दू)		कुल उत्तरदाता	
	आवृति	प्रति0	आवृति	प्रति0	आवृति	प्रति0	आवृति	प्रति0
हाँ	17	85.0	15	75.0	17	85.0	49	81.66
नहीं	3	15.0	5	25.0	3	15.0	11	18.33
योग	20	100.0	20	100.0	20	100.0	60	100.00

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 17 (85.0 प्रतिशत) हरिजन उत्तरदाता, 15 (75.0 प्रतिशत) बाल्मिकी उत्तरदाता तथा 17 (85.0 प्रतिशत) जुलाहा (हिन्दू) उत्तरदाताओं का मानना है कि शहरीकरण के कारण उनकी राजनीतिक सक्रियता एवं जागरूकता में वृद्धि हुई है। जबकि 03 (15.0 प्रतिशत) हरिजन उत्तरदाता, 05 (25.0 प्रतिशत) बाल्मिकी उत्तरदाता तथा 03 (15.0 प्रतिशत) जुलाहा (हिन्दू) उत्तरदाताओं का मानना है कि शहरीकरण के कारण उनकी राजनीतिक सक्रियता एवं जागरूकता में कोई वृद्धि नहीं हुई है।

अतः स्पष्ट होता है कि कुल 60 (100.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं में से 49 (91.66 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि शहरीकरण से उनकी राजनीतिक सक्रियता एवं जागरूकता में वृद्धि हुई है। जबकि 11 (18.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि शहरीकरण से उनकी राजनीतिक सक्रियता एवं जागरूकता में कोई वृद्धि नहीं हुई है।

उत्तरदाताओं से बातचीत करते समय यह तथ्य भी सामने आया कि शहरों में गाँवों की अपेक्षा सुविधाएँ यथा– बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि अधिक है। साथ ही रोजगार के अवसर अत्याधिक होने तथा जातिगत भेदभाव गाँवों की अपेक्षाकृत कम होने के कारण अनुसूचित जातियों का शहरों की तरफ रूझान बढ़ा है।

निष्कर्ष–

जनपद हरिद्वार में अनुसूचित जातियों के बच्चे आज बड़े–बड़े शिक्षण संस्थानों में आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अनुसूचित जातियों में शैक्षिक स्तर बढ़ने से उनके परम्परागत खान–पान, रीति–रिवाजों व पहनावें तथा राजनीतिक जागरूकता एवं सक्रियता में परिवर्तन और उच्च जातियों के साथ सामाजिक भेद–भाव कम हुआ है। अतः कहा जा सकता है कि जनपद हरिद्वार के ग्रामीण क्षेत्रों की अनुसूचित जातियाँ भी सामाजिक परिवर्तन, विकास तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया विशेषकर शहरीकरण के प्रभाव से अछूती नहीं हैं।

संदर्भ–सूची

1. **सुचिन्मयी, रचना** (2016) : **समसामयिक राजनीतिक मुद्दे**, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. **सिंह, योगेन्द्र** (2000) : **कल्चर चेंज इन इन्डिया**, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
3. **श्रीनिवास, एम0एन0** (2000) : **आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन,** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।